International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 8; August 2016; Page No. 327-328

शिक्षा में कौशल विकास की उपयोगिता

डॉ0 श्रीमती सुनीला एक्का

सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र), शासकीय महाविद्यालय मरवाही, जिला बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन काल में शिक्षा को विद्या कहा जाता था जिसकी उत्पति विद्धातु से हुई, जिसका अर्थ है जानना अतः विद्या का अर्थ है, ज्ञान। अंग्रेजी मतें शिक्षा को Education कहते हैं जिसकी उत्पति लैटिन भाशा में हुई है यह दो शब्द मिलकर बना है E+ Education इसका अर्थ है ज्ञान को भीतर से बाहर की ओर प्रेरित करना या निकालना। शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्षा धातु से बना है, जिसका अर्थ स्वयं सीखना और दुसरों को सीखाना। अपने व्यापक रूप में यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, मनुश्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा उस विकास प्रक्रिया का नाम है जो मनुश्य को बचपन से लेकर उसके अंतिम समय तक चलती रहती है।

शिक्षा समाज को सिर्फ संस्कारित एवं सुरभित नहीं करती वरन समाज को आर्थिक एवं व्यावसायिक सम्बल प्रदान कर उसे विकास की ऊचाईयां भी प्रदान करती है शिक्षा का एक स्वरूप व्यावसायिक शिक्षा भी होता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति व्यावसायिक कौशल में निपुर्ण होता है और इस प्रकार वह उस व्यक्ति की तुलना में तीव्र आर्थिक प्रगति करता है, जो शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से दुर रहता है। शिक्षा से जहां अच्छे व्यवसाय एवं अच्छी आजिविका प्राप्त करने की संभावनाएं बढ़ती हैं, वहीं शिक्षित व्यक्ति अपने व्यवसाय का संचालन सुचारू रूप से करता है।

आजादी के वर्शो बीत जाने के बाद भी अपनी शिक्षा प्रणाली की उस सृजनशीलता का विकास नहीं कर पाए, जो रोजगार में सहायक बनती और शिक्षित युवकों को आत्मनिर्भर बनाती। आजादी के बाद हमारी शिक्षा व्यवस्था में मूलचूल परिवर्तन हुए, परिवर्तन किए जाने की न सिर्फ आवश्यकता महसूस की जाती रही है वरन् इस प्रकार के परिवर्तन किए जाने से शिक्षा, अभिभावक एवं प्रबुद्ध वर्ग द्वारा मांग की जाती रही है। इन सबके बावजूद इस पहल अर्थात सुधारों की पहल में पिछड़े गए। जो सुधारों की पहलें की गई थी वे इतनी अव्यवाहारिक थी कि इसका प्रतिकुल या उल्टा प्रभाव पड़ा। इनसे सृजनशीलता का विकास तो नहीं हुआ बल्कि उल्टे छात्रों एवं अभिभावकों पर निरर्थक बोझ ही बढ़ा है। आज का मध्यमवर्गीय युवा पढ़ लिखकर नौकरी के सिवा किसी अन्य विकल्प की दौड़ के बारे में सोच नहीं पाता है। ऐसे में प्राप्तांको की होड़ में अपनी उर्जा को खपाना उसकी मजबुरी बन चुका है, जबकि कौशल विकास आज के दौर की आवश्यकता है।

शिक्षा में कौशल विकास की उपयोगिता

- आज हमारा देश औद्योगिकीकरण की दिशा में तेजी से प्रगति करने वाला अग्रणी देशो में है इसके लिए आवश्यक है कि हमारे यहां अधिकांश छात्र, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिल्पी बनें। इसके लिये शिक्षा का कार्य छात्रों में व्यवासायिक कुशलता की प्राप्ति हो सके। इस शिक्षा के माध्यम से एक ओर जहां उत्पादन की वृद्धि होगी तो दूसरी ओर यह बेरोजगारी के उन्मूलन में सहायक होगा।
- वैश्विक स्पर्धा में आगे रहने, देश के विकास एवं मजबुती के लिए और देश के युवकों के बेहतर भविश्य के लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बदलाव का समय आ गया है। समय की मांग है कि हम ना सिर्फ दक्षता विकास को प्रोत्साहन दें वरन् वर्तमान शिक्षा के प्रणाली के ढांचे में बुनियादी बदलाव लाएं। यह बहुत आसान काम नहीं है क्योकि थोड़े बहुत बदलावों से काम नहीं चलने वाला है बल्कि पुरानी व निरर्थक शिक्षा प्रणाली का पूरा चेहरा व चरित्र को बदलने की आवश्यकता है।
- शिक्षा व्यवस्था को समयानुकूल एवं रोजगारपरक बनाने के लिए पाठ्यक्रम एवं शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण बदलाव लाने के अलावा उद्यमिता की भावना को भी इसके साथ जोड़ना होगा।
- भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक पहचान दिलाने के उद्देश्य से ''मेक इन इंण्डिया'' नामक जिस वैश्विक पहल को आगे लाया गया है, इसका प्रमुख उद्देश्य भारत को वैश्विक विनिर्माण हब् के रूप में स्थापित करना है। युवकों की भुमिका को सार्थक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें दक्ष एवं उद्यमशील बनाया जाए। यह कार्य शिक्षा के स्तर पर, शिक्षा के दौरान ही हो सकता है। इसके लिए ऐसी अधोसंरचना बनानी होगी जो मजबुत अधोसंरचना वाली शिक्षा व्यवस्था को स्थापित करना होगा जिसमें कौशल, दक्षता विकास को पर्याप्त वरीयता दी जाए।
- शिक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाना चाहिए। इंजीनियरिंग कॉलेजों के बढ़ने या विस्तार से डिजाइनिंग सेवा उद्योगों की बढ़ोत्तरी हुई है। डिजाइनिंग और सेवा उद्योग में अच्छे शिक्षकों की कमी के कारण विद्यार्थियों का काम उच्च स्तर का ना होने के कारण कई दिक्कतें व मुश्किलें सामने आती थी डिजाइनिंग और सेवा उद्योग ने युवाओं को काम पर रखकर उन्हें प्रशिक्षित किया। दुसरे उद्योगों के मुकाबले इस उद्योग में वेतन अच्छा था फलस्वरूप काम करने की अच्छी स्थिती मिलने के कारण युवाओं अपने काम की कमियों को दूर किया और अच्छे ढंग से अपना काम करने लगे जिससे उद्योगों में परिपक्वता आई उद्योगों की सेवाओं का विस्तार हुआ और उच्चस्तरीय डिजाइनिंग का काम किया जाने लगा।
- ''मेक इन इंण्डिया'' अभियान के उद्देश्यों में से एक कालेजों की गुणवत्ता का सुधान करना है जिससे विद्यार्थी इसमें अपना ज्यादा से ज्यादा योगदान दे सके, इसके लिए आवश्यक है कि हर प्रकार के कौशल व दक्षता को विकसित किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अनुसंधान एवं विकास, आई पी आर के सृजन, उत्पादों की डिजाइनिंग और परिक्षण, बड़े पैमाने पर विनिर्माण और विपणन में योगदान दे सकें।
- (IIM Researchpark) आई आई एम रिसर्च पार्क उत्पादों की डिजाइनिंग, विकास विनिर्माण और व्यावसायीकरण के क्षेत्र में देश की स्थिती को मजबुती प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका मार्गदर्शक के रूप में निभा सकते हैं। ये रिसर्च पार्क शिक्षण संस्थाओं के आस–पास या निकट होते हैं इन रिसर्च पार्को में संस्थान के शिक्षक, कर्मचारियों और विद्यार्थियों के सहयोग से अनुसंधान एवं विकास का कार्य किया जाता है।

यहां तीन समूहों – शिक्षकों, उद्योगजगत के अनुभवी कर्मचारियों और युवाओं का संगम होता है। तीनों समूहों के परस्पर, औपचारिक और अनौपचारिक परिवेश में एक दूसरे के साथ विचारों का आदान–प्रदान करते हैं, जिससे नई बातें निकलकर आती हैं। शिक्षकों के पास सोंच होती है, उद्योगजगत से जुड़े लोग शिक्षकों की सोंच को किस तरह प्रयोग में लाया जाए और युवाओं पर गौर करें तो उनके लिए कुछ भी कार्य को करना असम्भव नहीं होता। इस तरह ये तीनों समूह मिलकर काम करते हैं जिससे अपेक्षाकृत सकारात्मक परिणाम निकलते हैं।

शिक्षा मनुश्य को शक्तिशाली बनाती है। मनुश्य के पास जितना अधिक बौद्धिक क्षमता होगी उसके आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होती है व उसके उन्नति के द्वार खुलने लगते हैं, वह अपनी तकनीकी कौशल, धन एवं योग्यता के बल पर दुनिया में अपना अलग स्थान बना लेते हैं। किसी भी देश के लम्बे समय व दीर्घकालीन विकास व उसके सुदृढ़ व बेहतर स्थिती के लिए इस बात की जरूरत होती है कि उसके देश की शिक्षा गुणवत्तापूर्ण हो एवं शिक्षा में ''कौशल विकास शिक्षा'' अनिवार्य रूप से सम्मिलित हो। शिक्षा में बुनियादी बदलाव के साथ–साथ कौशल विकास की शिक्षा को प्रोत्साहन देने की पहल से भारत के विकास में वर्तमान समय में अच्छे परिणाम आने लगे है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 संतोश चौधरी,डॉ. सावित्री माथुर/शिक्षा सिद्धांत एवं आधुनिक भारत में शिक्षा/पृश्ठ 15, 16, 112, 113, 218।
2. पत्रिका योजना जनवरी 2016/पृश्ठ 38, 39, 40।
3. पत्रिका कुरूक्षेत्र अगस्त 2016/पृश्ठ 16, 18, 19।